classmate
Date
Page

आदि तथा उसकी सहायक नदियाँ थी जोकि सिंधु तथा सरस्वती नदियों के बीच में बहती है। इस कारण बहुत से विद्वान इस सभ्यता को सिंधु-सरस्वती सभ्यता कहना उचित समझते तथा कुछ विद्वान इसको सरस्वती सभ्यता कहना ही उचित समझते हैं।